भारत–चीन संबंधों में भू–राजनीतिक मुद्‌दों का प्रभाव
(वर्ष 1991 से वर्तमान तक)

शोध प्रस्तावना

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद के

सामाजिक विज्ञान संकाय के

राजनीति–विज्ञान विभाग में

पीएच. डी. उपाधि हेतु समर्पित

द्वारा

शोधार्थी

सिद्‌दिका अंजुम

पंजीयन संख्या :............................)

विश्वविद्यालय विभाग : राजनीति विज्ञान

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध निदेशक

डॉ. मीना मालखंडी

सहायक प्रोफेसर एवं विभाग अध्यक्ष राजनीति विज्ञान

गुरूनानक कॉलेज, धनबाद

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

दिसंबर, 2023

परिचय

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ संबंधो का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अस्तित्व में आने और नवोदित राज्यों के निर्माण के बाद राज्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।[1] प्रस्तुत शोध का उद्देश्य एशिया महाद्वीप के दो बड़ी शक्तियाँ भारत–चीन संबंधों में भू–राजनीतिक मुद्दों के प्रभाव का अध्ययन (1991 से वर्तमान तक) करना है। भू–राजनीतिक मुद्दे भारत और चीन के बीच जटिल विवादित मुद्दे हैं। विवादों के कारणों का पता लगाना ही अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का एक प्रमुख उद्देश्य है।[2]

''अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर भूगोल के प्रभावों का अध्ययन भू–राजनीति कहलाती है।''[3] भारत और चीन एशिया के दो विशाल जन संख्या वाला देश तथा उभरती हुई शक्तियाँ है। दोनों के बीच विधमान भू–राजनीतिक मुद्दे इनके संबंधों को प्रभावित करते है। 21वीं शताब्दी में भारत की सबसे बड़ी भू–राजनीतिक चुनौती चीन का उदय है।[4] भू–राजनीतिक रूप से चीन एशिया में स्थित एक बड़ी ताकत है जो इस क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। साथ ही भारत भी एक एशियाई देश है जिसकी लंबी सीमा चीन के साथ जुड़ी है। दोनों के बीच अपरिभाषित सीमा तनाव का मुख्य कारण है।[5] 1962 का सीमा युद्ध तनाव का परिणाम है जिसने भारत और चीन के क्षेत्रीय भू–राजनीतिक रूपरेखा को बदल दिया।[6]

चीन भारत को दक्षिण एशिया में उलझाकर रखने की नीति अपना रहा है।[7] भारत ही ऐसा देश है जो एशिया में चीन को चुनौती दे सकता है। चीन के इतिहास में कहीं भी यह देखने को नहीं मिलता कि उसने किसी भी दूसरे देश को अपनी बराबरी का स्थान दिया हो।[8] भौगोलिक रूप से दोनों देश सीमा विवाद से ग्रस्त हैं जो कि दोनों के द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करते रहते हैं। साथ ही अन्य भू–राजनीतिक मुद्दे भी दोनों के संबंधों में प्रभाव डाल रहे हैं। दक्षिण चीन सागर में चीन द्वारा सैनिक अड्डो का निर्माण और साथ ही हिंद महासागर में भी चीन का बढ़ता प्रभाव, 2017 में हुए डोकलाम विवाद आदि ऐसे मुद्दें हैं जो भारत के लिए चिंता का विषय है।[9]

भौगोलिक रूप से दोनों देशों की राजनीति भी प्रभावित हुई है। दोनों देशों के बीच अनसुलझे भू–राजनीतिक मुद्दे इनके राजनीतिक विकास में बाधा बने हुए है। इसका प्रमाण 15 जून 2020 को गलवान घाटी में हुए सैन्य हमला है।[10] बेल्ट एंड, रोड इनिशिएटिव भी शी जिनपिंग की ऐसी मंशा है जिसके द्वारा चीन एशिया में अपना प्रभुत्व बढ़ाना चाहता है।[11]

भू राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के बावजूद आर्थिक क्षेत्र में चीन भारत का सबसे बड़ा भागीदार है।[12] इनके बीच विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग भी देखने को मिलता है। इनके सहयोग से एक नई विश्व व्यवस्था स्थापित होने की कामना की जा सकती है।[13] इनका संबंध एशिया और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करेगें। प्रस्तुत शोध के द्वारा बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में इन दो बड़ी शक्तियों का अध्ययन किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

- मिश्रा एवं भारद्वाज, (2016). ***बीसवी सदी में भारत–चीन संबंध*** में भारत–चीन संबंधो को निष्पक्षता से समझाया गया है। यह पुस्तक चीन को भारतीय दृष्टिकोण से समझने के अलावा अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी समझने में सहायक है।[14]
- दत्त, (1999). ***इंडियाज फॉरेन पोलिसी इन ए चेंजिंग वर्ल्ड ऑडर*** में बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति, वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति और उसके साथ घरेलू सम्पर्क का गहराई से वर्णन किया गया है। इसमें लेखक के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सभी उतार–चढ़ाव, विरोधाभासों, धाराओं और प्रतिधाराओं का ध्यान रखा गया है।[15]
- सिंह, (2020). ***पावर शिफ्ट : इंडिया चाइना रिलेशन्स इन ए मल्टिपोलर वर्ल्ड*** में लिखा है कि पावर शिफ्ट यह समझाने में सहायक है कि भारत और चीन आज इस स्थिति में कैसे पहुँचे जहां वे खड़े हैं। 1962 के सीमा युद्ध ने इनके भू–राजनीतिक स्थिति को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इनका संबंध एशिया के भविष्य को प्रभावित करेगें।[16]
- कुमार, (1976). ***अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष*** में लेखक के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सभी सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। इसमें विदेश नीति और राजनय का भी वर्णन किया गया है।[17]
- दीक्षित, (2020). ***भारतीय विदेश नीति*** में लेखक ने चीन सहित विश्व के अन्य देशों के साथ भारतीय संबंधों का मूल्यांकन किया है। साथ ही भारत और संयुक्त राष्ट्र एवं भारतीय विदेश नीति से संबंधित चुनौतियों का भी वर्णन किया है।[18]
- पंत, (2016). ***21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध*** के भारत और चीन अध्याय में लिखा गया है कि आरंभ में दोनों के संबंध काफी मधुर थे इसलिए भारतीयों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया की चीन ने कभी भी किसी देश को अपनी बराबरी का स्थान नहीं दिया है। भारत और चीन एक–दूसरे के प्रतिद्वंदी है। आने वाले समय में दोनों के संबंध सामान्य हो लेकिन इनके बीच प्रतिद्वंद्विता कायम रहेगी।[19]
- शौरी, (2018) ***चीन मित्र या ......?*** के माध्यम से चीन की नीतियों के प्रति भारत को सजग रहने की आवश्यकता पर बल दिया गया हैं, जिसमें बताया गया है कि चीन हमेशा ऐसी नीतियों को अपनाता है जिससे भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्रों में उलझा रहे।[20]
- खन्ना, अरोड़ा एवं कुमार, (2019). ***भारत की विदेश नीति*** यह 21वीं शताब्दी में भारत की विदेश नीति को समझने में सहायक है। साथ ही इसमें चीन को भारत की भू–राजनीतिक चुनौती के रूप में दर्शाया गया है। इसमें विस्तार से भारत–चीन संबंधों का वर्णन भी शामिल है।[21]
- मिश्रा, (2018). ***भारतीय विदेश नीति : भूमंडलीकरण के दौर में*** भारत–चीन संबंधों को सहयोग एवं संघर्ष दोनों रूपों से समझने में सहायक है। इसमें यह भी बताया गया है कि दोनों के बीच विद्यमान असमानता भारतीय विदेश नीति पर दबाव डालेगें। अतः आने वाले समय में चीन के साथ सामान्य संबंध कायम करना भारत के लिए चुनौती होगी।[22]

- कुमार, (2021). ***भारत–चीन संबंध : अतीत और वर्तमान*** भारत–चीन के सभी महत्वपूर्ण घटनाओं को मुख्य रूप से समझने में सहायक है। इसमें स्वतंत्रता से पूर्व और वर्तमान तक के सभी घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। सीमा विवाद के कारण उत्पन्न तनाव अभी भी मौजुद है। इसका वर्णन किया गया है। चीन की नीतियों के प्रति भारतीय सुरक्षा की ओर भी ध्यान इंगित किया गया है।[23]
- कल्हा, (2022). ***भारत–चीन सीमा मुद्दे : विवाद निपटान की तलाश*** भारत–चीन सीमा समस्या के समाधान के लिए किये गए प्रयासों को समझने में सहायक है।[24]
- ***चौधरी, (2009). बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत–चीन संबंधों का अध्ययन*** भू–राजनीतिक रूप से भारत–चीन संबंधों को समझने में सहायक है। इसमें यह बताया गया है कि दोनों के संबंध एशिया सहित अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करेगें। दोनों ही उभरती हुई शक्तियाँ है। अतः इनके एक साथ होने से एक नई विश्व–व्यवस्था की स्थापना हो सकती है।[25]
- ***मुनी एवं दास, (2009). इंडिया एण्ड चाइना : द नेक्स्ट डिकेड*** में भारत और चीन को उभरते खिलाड़ियों के रूप में बताया गया है। आने वाले समय में इनका संबंध एशिया और विश्व राजनीति को प्रभावित करेगें। साथ ही इसमें भारत और चीन के सामान मुद्दों जैसे उर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और वैश्विक वित्तीय अस्थिरता आदि का वर्णन शामिल है।[26]
- शर्मा, (2018). ***चीन एक आर्थिक व भू–राजनैतिक चुनौती*** में चीन की साम्राज्वादी एवं भारत विरोधी नीति का वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि समय–समय पर चीन हमारी सीमा में घुसपैठ करने के चलते वह हमारी सुरक्षा के लिए खतरा तो है ही साथ ही वह हमारी आर्थिक व भू–राजनैतिक चुनौती भी बन गया है।[27]

शोध समस्या

भारत और चीन दो पड़ोसी देश है, इनके संबंध कभी भी स्थिर नहीं रहे है। इनमें उतार चढ़ाव होता रहा है। इनके संबंध काफी जटिल रहे है। दोनों एक दूसरे के प्रतिद्वंदी है। इनका संबंध एशिया और विश्व राजनीति को प्रभावित करेगें भू–राजनीतिक मुद्दो ने भारत–चीन संबंधो को मुख्य रूप से प्रभावित किया है एवं इससे भारत की विदेश नीति भी प्रभावित हुई है। वैश्वीकरण और बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में चीन के साथ सामान्य संबंधों की स्थापना भारत के लिए चुनौती है।

प्रस्तावित शोध में जाँच की जाने वाली समस्या का विवरण :–

- भू–राजनीति किस प्रकार भारत–चीन संबंधो की प्रभावित करती है।
- वर्तमान परिदृश्य में कौन–से भू–राजनीतिक मुद्दें है जो देशों के संबंधों में प्रभाव डालते है।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य :–

1. अंतर्राष्ट्रीय संबंधो में भू राजनीतिक मुद्दों के प्रभाव का अध्ययन।
2. भारत–चीन संबंधो में भू–राजनीतिक मुद्दो के प्रभाव का अध्ययन।
3. वैश्वीकरण और वर्तमान विश्व–व्यवस्था में भारत–चीन संबंधो का अध्ययन।

शोध परिकल्पना :–

1. भारत और चीन पड़ोसी देश है परन्तु भू–राजनीतिक मुद्दें इनके संबंधों में नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

- भू–राजनीतिक मुद्दें भारत–चीन संबंधों को प्रभावित करते है जिसके कारण उनके बीच सीमा विवाद, समुंद्री क्षेत्र में तनाव, जलवायु परिवर्तन आदि तनावपूर्ण मुद्दे उभरते हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि पर आधारित होगा।

तथ्य संकलन स्त्रोत

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्त्रोतों का उपयोग किया जाएगा।

प्राथमिक स्त्रोत

प्राथमिक स्त्रोतों के अंतर्गत सरकारी एवं प्रशासनिक दस्तावेज का उपयोग किया जायेगा एवं भारत–चीन से संबंधित विषय के विशेषज्ञों से साक्षात्कार लिए जाएंगें।

द्वितीयक स्त्रोत

द्वितीयक स्त्रोतों के अंतर्गत विषय से संबंधित पुस्तको, समाचार पत्र, पत्रिकाओं, लेख, जर्नल्स, इन्टरनेट आदि का प्रयोग किया जाएगा।

शोध कार्य का महत्व एवं प्रासंगिकता

- बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत–चीन संबंधों का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि ये दोनों ही एशिया महाद्वीप के पड़ोसी एवं शक्तिशाली देश हैं। दोनों के मध्य अनेक भू–राजनीतिक मुद्दे है जिससे दोनों के संबंध तनावपूर्ण बने रहते है, इनमें प्रमुख सीमा विवाद है जो दोनों के मध्य निरंतर विद्यमान है। इससे भारत की सुरक्षा संकट में पड़ सकती है। अतः भारत की आत्मरक्षा के लिए इस शोध का महत्व है। साथ ही भारत को 1962 जैसी किसी स्थिति का सामना न करना पड़े और भविष्य में इसकी सीमाएं सुरक्षित रहे इस उद्देश्य से भी इस शोध का महत्व प्रदर्षित होता है।

- भारत और चीन एक दूसरे के प्रतिद्वंदी एवं प्रतिस्पर्धी है और साथ ही पड़ोसी भी है। भूमण्डलीय एवं समुंद्री सभी स्तरो पर हमें संबंधो को समझने की आवश्यकता है। दोनों के गंभीर भू–राजनीतिक समस्याएं है। इन समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान एवं संबंधो को सामान्य बनाए जाने की कोशिश करनी होगी। साथ ही चीन की नीतियो के प्रति भी भारत को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

- अनेक समस्याओं के होते हुए भी दोनों तेजी से बढ़ती अर्थ–व्यवस्था है। दोनों बड़ी जनसंख्या वाला तथा विकासशील देश है। इस दृष्टि से भी इनके संबंधो पर अध्ययन किया जाना आवश्यक है क्योंकि इनका संबंध एशिया की राजनीति को प्रभावित करेगें। वैश्वीकरण और वर्तमान विश्व व्यवस्था पर भारत–चीन संबंधों के प्रभाव के दृष्टिकोण से भी इस शोध का महत्व प्रदर्शित होता है। साथ ही भू–राजनीति ने भारतीय विदेश नीति को मुख्य रूप से प्रभावित किया है।

- प्रस्तावित शोध के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय संबंध में भविष्य में होने वाले शोधो में भी सहायता प्राप्त हो सके यह प्रयास किया जाएगा।

भविष्य योजना

प्रस्तुत शोध में भारत–चीन के बीच विद्यमान भू–राजनीतिक मुद्दों का अध्ययन किया जाएगा। भविष्य में इनके नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव क्या हो सकते है एवं ये किस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करेगें इसका अध्ययन किया जा सकता है। भारतीय विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इनके प्रभाओं का अध्ययन किया जाएगा।

यह प्रयास किया जाएगा कि शोध में कम से कम त्रुटियॉ हो और यह समाज के लिए उपयोगी हो। साथ ही भविष्य में होने वाले शोध में इससे सहायता ली जा सकती है। भारत–चीन संबंधो पर दूसरे आयाम पर भी शोध किया जा सकता है।

संभावित अध्यायीकरण

प्रस्तावित शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया जाएगा –

प्रस्तावना – सिंहावलोकन, उद्देश्य, परिकल्पना, महत्व, शोध विधि।

प्रथम अध्याय – अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं भू–राजनीति की अवधारणाएँ –

यह अध्याय अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं भू–राजनीति की अवधारणा पर आधारित होगा। बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भू–राजनीति ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को कैसे प्रभावित किया इसका अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय – भारत–चीन संबंध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – इस अध्याय में भारत–चीन संबंधों की ऐतिहासिक स्थिति का अध्ययन किया जाएगा जिसमें सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संबंधों का वर्णन शामिल होगा।

तृतीय अध्याय – भू–राजनीतिक मुद्दों के विभन्न प्रकार –

इस अध्याय में भू–राजनीतिक मुद्दो के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय – भू–राजनीतिक मुद्दें और भारत–चीन संबंध –

यह अध्याय मुख्य रूप से भारत–चीन संबंधों पर भू–राजनीतिक मुद्दों के प्रभाव पर आधारित होगा। बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में इनके संबंधों का अध्ययन किया जाएगा।

पंचम अध्याय – वैश्वीकरण और वर्तमान विश्व–व्यवस्था का भारत–चीन संबंधो पर प्रभाव –

इस अध्याय में भारत–चीन संबंधों का अध्यन वैश्वीकरण और वर्तमान विश्व–व्यवस्था के संदर्भ में किया जाएगा।

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

1. कुमार, एम. (1976). अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष. शिवलाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृष्ठ 297
2. कुमार, एम. (1976). अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष. शिवलाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृष्ठ 12
3. भूराजनीति–विकिपीडिया https:/hi.wikipedia.org
4. खन्ना, वी.एन., अरोड़ा, एल., एवं कुमार, एल. (2019). भारत की विदेश नीति. विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 नोएडा, पृष्ठ 1
5. गुप्ता, ए. (दिसंबर 24 2019). एशियाई भूराजनीति में चीन का प्रभाव : भारत के लिए निहितार्थ *https://www.vifindia.org/article/hindi/2019/december/24/Asia-bhurajniti-me-china-ka-parbhav*
6. सिंह, जेड.डी. (2020). पावर शिफ्ट : इंडिया चाइना रिलेशन्स इन ए मल्टिपोलर वर्ल्ड. मेकमिलन पब्लिकेशन, पृष्ठ 1
7. शौरी, ए. (2018). चीन मित्र या .... ?. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 19
8. पंत, पी. (2016). 21वी शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध. मेग्रेव हिल्स एज्युकेशन, नई दिल्ली, अध्याय 3, पृष्ठ1
9. मिश्रा, आर. (2018). भारतीय विदेशनीति भूमंडलीयकरण के दौर में. ओरियंट ब्लैकस्वन, पृष्ठ 216
10. रहमती, एफ., अली मो0 ए., एवं कमराजु, एम. (जुन 06 2020). ए स्टडी ऑन इंडिया–चाइना करेंट जियोपोलिटिकल ईसूस एण्ड इम्प्लीकेशन्स. इंटरनेशनल जर्नल (आई जे एस आर ई एम) आई एस एस एनः 2582–3930. वोल्युम 4
11. गुप्ता, ए. (दिसंबर 24, 2019) एशियाई भूराजनीति में चीन का प्रभावः भारत के लिए निहितार्थ *https://www.vifindia.org/article/hindi/2019/december/24/Asia-bhurajniti-me-china-ka-parbhav*
12. खन्ना, वी., अरोड़ा, एल., एवं कुमार. एल. (2019). भारत की विदेश नीति. विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0, नोएडा, पृष्ठ 319
13. मिश्रा, आर. (2018). भारतीय विदेशनीति भूमंडलीयकरण के दौर में. ओरियंड ब्लैकस्वन, पृष्ठ 228
14. मिश्रा, के., एवं भारद्वाज, पी. (2016). बीसवी सदी में भारत–चीन संबंध. जेन फेक्स पब्लिकेशन, पृष्ठ 2
15. दत्त, वी.पी. (1999). इंडियाज़ फॉरेन पोलिसी इन ए चेंजिंग वर्ल्ड ऑर्डर. एस. चंद पब्लिकेशन, पृष्ठ 1
16. सिंह, जेड.डी. (2020). पावर शिफ्ट : इंडिया चाइना रिलेशन्स इन ए मल्टिपोलर वर्ल्ड. मेकमिलन पब्लिकेशन, पृष्ठ 1
17. कुमार, एम. (1976). अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष. शिवलाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृष्ठ 12
18. दीक्षित, जे.एन. (2020). भारतीय विदेश नीति. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 2
19. पंत, पी. (2016). 21वी शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध. मेग्रेव हिल्स एज्युकेशन, नई दिल्ली पृष्ठ 1
20. शौरी, ए. (2018). चीन मित्र या ..... ?. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 19
21. खन्ना, वी.एन., अरोड़ा एल., एवं कुमार, एल. (2019). भारत की विदेश नीति. विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0, नोएडा, पृष्ठ 221

22. मिश्रा, आर. (2018). भारतीय विदेशनीति भूमंडलीयकरण के दौर में. ओरियंट ब्लैकस्वन, पृष्ठ 220
23. कुमार, आर. (2021). भारत–चीन संबंध : अतीत और वर्तमान. आकृती प्रकाशन, पृष्ठ 4
24. कल्हा, आर. (2022). भारत–चीन सीमा मुद्देः विवाद निपटान की तलाश. प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 2
25. चौधरी, ए. (2009). बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत–चीन संबंधों का अध्ययन. राधा प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 14
26. मुनी, एस.डी., एवं दास, एस. (2009). इंडिया एण्ड चाइना : द नेक्स्ट डिकेड. रूपा एण्ड कम्पनी प्रकाशन, पृष्ठ 3
27. शर्मा, बी.पी. (2018). चीन एक आर्थिक व भू–राजनैतिक चुनौती, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 2

ग्रंथ सूची

- कल्हा, आर. (2022). भारत–चीन सीमा मुद्दे : विवाद निपटान की तलाश. प्रभात प्रकाशन
- कुमार, एम. (1976). अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष. शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा
- कुमार, आर. (2021). भारत–चीन सम्बन्ध : अतीत और वर्तमान. आकृती प्रकाशन
- खन्ना, वी. एन., कुमार, एल. (2020). अंतर्राष्ट्रीय संबंध. विकास पब्लिशिंग हाउस
- खन्ना, वी. एन., अरोड़ा, एल., एवं कुमार, एल. (2019). भारत की विदेश नीति. विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा0 लि0, नोएडा
- गुप्त, एम. एल. (2019). भारत–चीन कूटनीतिक संबंध. एटलांटिक पब्लिशर्स
- चौधरी, ए. (2009). बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत–चीन संबंधों का अध्ययन. राधा पब्लिकेशन्स
- जैन, पी. सी. (2014). भारत की विदेश नीति. एटलांटिक पब्लिशर्स
- जौहरी, जे. सी. (2021). अन्तर्राष्ट्रीय संबंध. एस. बी. पी. डी. पब्लिकेशन्स
- दत्त, वी. पी. (1999). इंडियाज़ फोरन पोलिसी इन ए चेंजिंग वर्ल्ड ऑर्डर. एस. चंद पब्लिकेशन
- दीक्षित, जे. एन. (2020). भारतीय विदेश नीति. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- पंत, पी. (2016). 21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध. मेग्रेव हिल्स एज्युकेशन, नई दिल्ली
- मिश्रा, आर. (2018). भारतीय विदेशनीति भूमंडलीयकरण के दौर में. ओरियंट ब्लैकस्वन
- मुनी, एस.डी., एवं दास, एस. (2009). इंडिया एण्ड चाइना : द नेक्स्ट डिकेड. रूपा एण्ड कम्पनी प्रकाशन
- मिश्रा, के., एवं भारद्वाज, पी. (2016). बीसवी सदी में भारत चीन संबंध. जेन फेक्स पब्लिकेशन
- विश्वमोहन, (2023). भारत–चीन : नए रिश्ते. नई राहें, डायमंड बुक्स प्रकाशन
- शर्मा, बी. पी. (2018). चीन एक आर्थिक व भू–राजनीतिक चुनौती. प्रभात प्रकाशन
- शौरी, ए. (2018). चीन मित्र या ....?. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- सिंह, आर. वी. (2015). भारत–चीन संबंध : एक संवाद. राधा पब्लिकेशन्स

- सिंह, जेड. डी. (2020). पावर शिफ्ट : इंडिया चाइना रिलेशन्स इन ए मल्टिपोलर वर्ल्ड. मेकमिलन पब्लिशन
- सिंह, वी. (2023). भारतीय विदेश नीति बदलाव की ओर. एक्सप्रेस बुक्स प्रकाशन

लेख एवं पत्रिका

गुप्ता, ए0 (दिसंबर 24,2019), एशियाई भूराजनीति में चीन का प्रभाव : भारत के लिए निहितार्थ
https://www.vifindia.org/article/hindi/2019/december/24/Asia-bhurajniti me-china-ka-parbhav

भूराजनीति–विकिपिडिया *https://wikipedia.org*

रहमती, एफ. अली, मो0 ए. एवं कमराजू, एम. (जून 06 2020). ए0 स्टडी ऑन इंडिया–चाइना करेंट जियोपोलिटिकल ईसूस एण्ड इम्प्लीकेशन्स, इंटरनेशनल जर्ननल वोल्युम 04 (आई जे एस आर ई एम) आई एस एस एन : 2582–3930 वोल्युम 4

सरन, एस. (फरवरी 19, 2024). चीन की भू–आर्थिक स्थिति में बदलाव और भारत
https://hindi.business-Standard.com/opinion/change-in chinas-geo-economic-position and.india-id-344048

सूरी, एन. (नवम्बर 28, 2019). भारत–चीन संबंध : वुहान के बाद
https://www.mea.gov.in/distinguished-legtures-detail-hi.htm?862